नारी शिक्षा की उपादेयता

डॉ0 शोभनाथ यादव*

किसी भी समाज में शिक्षा सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संरचना का मूल आधार होती है। एक तरफ शिक्षा जहां व्यक्ति को सामाजिक, राजनैतिक पर्यावरण एवं जटिल प्रक्रियाओं को समझने में सहायता प्रदान करती है, वहीं दूसरी तरफ यह उनमें अर्थपूर्ण सहभागिता के लिए प्रेरित करती है। इतना ही नहीं मूल्यों के प्रतिपादन, स्थायित्व तथा हस्तान्तरण का प्रमुख आधार और समाज के विभिन्न वर्गों के लिए उर्ध्व गतिशीलता का भी महत्वपूर्ण साधन शिक्षा है। इस प्रकार शिक्षा न केवल ज्ञान के लिए, बल्कि व्यक्ति की सामाजिक–आर्थिक प्रगति एवं व्यक्तित्व के विकास के लिए अपरिहार्य साधन भी है। शिक्षा, पद, प्रतिष्ठा एवं सत्ता का प्रतीक होने के साथ–साथ व्यावसायिक ज्ञान का पाश्चात्य विद्वानों ने अपने अध्ययनों के आधार पर समाज में शिक्षा के महत्व तथा उपयोगिता पर प्रकाश डाला है। डॉ0 गोयल के अनुसार, ''शिक्षा व्यक्ति को उच्च आय वाले तथा प्रतिष्ठित व्यवसायों में जाने के लिए आधार प्रदान करती है और फलस्वरुप व्यक्ति के अन्तर्सामूहिक पद एवं सत्ता परिवर्तन का मूल आधार बनाती है। शिक्षा एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा व्यक्ति ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करके समाज में विशेषज्ञों, बुद्धिजीवियों एवं प्रौद्योगतन्त्रवादियों के वर्गों में प्रवेश कर सकता है और उनसे सम्बन्धित अधिकार तथा सुविधाएं प्राप्त कर सकता है।'' (गोयल)। विद्वानों ने व्यक्तिगत दृष्टिकोण से शिक्षा को पद एवं प्रतिष्ठा का प्रतीक माना है (पारिक तथा त्रिवेणी), (कुप्पूस्वामी तथा श्रीनिवास)। वर्ल्ड सर्वे ऑफ एजूकेशन के अनुसार विकासशील देशों में औपचारिक शिक्षा उच्च पद एवं स्थिति का मापदण्ड है और यह भी सत्य है कि अविकसित देशों में अभी भी शिक्षा पर उच्च वर्गों का ही एकाधिकार है। क्लार्क के अनुसार व्यावसायिक प्रशिक्षण से सम्बन्धित होने के कारण शिक्षा व्यक्तिगत तथा सामाजिक प्रगति का आधार है।

व्यावसायिक संरचना के अन्तर्गत शिक्षा वह भौतिक आधार है, जिसके बगैर वर्तमान तकनीकी और प्रौद्योगिकीय युग में समाज के राजनैतिक ढांचे में कोई भी व्यवसायी सफल नहीं हो सकता है। आधुनिक प्रौद्योगिकीय तथा प्रशासन तन्त्रीय व्यावसायिक संरचना में यह व्यक्ति की प्रकार्यात्मक भूमिका निर्धारित करता है और व्यावसायिक गतिशीलता का अवसर प्रदान करती है। यही नहीं, यह व्यक्ति की सामाजिक गतिशीलता का एक महत्वपूर्ण साधन तथा आधुनिक प्रौद्योगिकी को अपनाने का एक प्रमुख आधार है। खान ने शिक्षा को प्रभावशाली सामाजिक–राजनैतिक सहभागिता करने का महत्वपूर्ण आधार माना है (मुमताज अली खान)।

खान ने सामाजिक स्तर पर शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन, गतिशीलता तथा आधुनिकीकरण का एक उपकरण और स्त्रोत माना है। अनके विद्वानों के अनुसार शिक्षा एक ऐसी कुन्जी है, जो आधुनिकीकरण के द्वार खोलती है (फ्रेडरिक हारविन्सन तथा चार्ल्स, ए0मेयर्स)। डॉ0 गोयल के अनुसार शिक्षा व्यक्ति को अपने आस–पास होने वाली घटनाओं एवं राजनैतिक मूल्यों तथा संस्थाओं को समझने में सहायता करती है। भारत जैसे विविधता युक्त समाज में शिक्षा ही एक ऐसा साधन है, जो गणतान्त्रिक समता तथा सामाजिक न्याय सम्बन्धी मूल्यों का प्रतिपादन तथा स्तरीकरण कर सकती है।

समाज में मानव के विकास हेतु शिक्षा सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपकरण है। हमारे देश में महिलाओं की परिस्थिति सुधारने हेतु किये गये प्रयासों में शिक्षा को प्रथम वरीयता प्रदान की गयी है। पिछले वर्षों में नियोजन का लक्ष्य महिलाओं को उनके गृहणी और माता के पारस्परिक कार्य से हटाकर परिवार और राष्ट्रीय आय में उनके योगदान और उत्पादनकर्ता के रुप में दिया जाने लगा। राष्ट्र का भविष्य उसकी सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास शिक्षा सम्पन्न बालक–बालिकाओं पर निर्भर करता है। बालक बालिकाओं को संस्कार युक्त बनाने तथा उन्हें शिक्षित करने का बहुत कुछ दायित्व मां पर होता है। इस हेतु मां का शिक्षित और संस्कार युक्त होना अत्यन्त आवश्यक है। राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास में स्त्री शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। नारी शिक्षा ही राष्ट्र की कुन्जी है। परिवार, समाज एवं देश की सर्वांगीण उन्नति स्त्री शिक्षा पर ही निर्भर है। नारी शिक्षा ही वह केन्द्र है जिस पर राष्ट्र की कार्यकुशलता निर्भर करती है। व्यक्ति का पूर्ण विकास व व्यक्ति में अंतर्निहित क्षमताओं का पूर्ण विकास ही शिक्षा का उद्देश्य है। एक

* रीडर–समाजशास्त्र, डी0आर0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सेवरा, फैजाबाद

विकसित समाज के लिए नारियों का पुरुषों के समान शिक्षित होना अति आवश्यक है। एक सुशिक्षित नारी ही समाज एवं परिवार के दायित्वों का निर्वहन कुशलतापूर्वक कर सकती है।

सन् 1948 में राधाकृष्णन आयोग ने सुझाव दिया था कि ''शिक्षित स्त्री के बिना शिक्षित पुरुष हो ही नहीं सकता। यदि पुरुषों और स्त्रियों में से केवल किसी एक के लिए सामान्य शिक्षा का प्रावधान करना हो तो यह अवसर स्त्रियों को देना चाहिए क्योंकि तब वह शिक्षा स्वमेव अगली पीढ़ी को प्राप्त हो जायेगी। सन् 1963 में वनस्थली विद्यापीठ में भाषण देते हुए पं0 नेहरु जी ने भी इस तथ्य को दोहराया था कि लड़के की शिक्षा एक व्यक्ति की शिक्षा है परन्तु एक लड़की की शिक्षा सम्पूर्ण परिवार की शिक्षा है। इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। वस्तुतः घर वैसा होता है जैसा उसे गृहणी बनाती है। बच्चे वैसे बनते हैं जैसे उन्हें मां बनाती है। गर्भावस्था में बालक, वैसा ही संस्कार ग्रहण करता है जैसा माता प्रदान करती है। जन्म के बाद प्रारम्भिक वर्षों में बालक की हर गतिविधि पर मां का ही नियत्रंण होता है, इसलिए मां को प्रथम शिक्षक कहा गया है। नारी की यह भूमिका बालक के समाजीकरण में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। एतदर्थ नारियों की शिक्षा महत्वपूर्ण है।

शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि माता, पिता और आचार्य, जब ये तीन उत्तर शिक्षक होते हैं तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। (मातृमान पितृमानाचार्यवान् पुरुषोवेद) तैत्तिरीय उपनिषद में कहा गया है ''मातृ देवो भव'' अर्थात् माता को देवता के समान पूजनीय मानो। मनुस्मृति में कहा गया है ''उपाध्यायान् दशाचार्याः आचार्याणां शतं पिता, सहस्त्रं तु पितृन माता गौरवेणातिरिच्यते।'' उपाध्याय (उपनयन संस्कार के समय गायत्री मंत्र देने वाले) से दस गुनी अधिक महत्ता आचार्य की है क्योंकि वह विद्या देता है। सौ आचार्यो के समान महत्ता पिता की है और हजार पिताओं से बढ़कर महत्ता माता की है।''

स्त्रियोचित मूल्यों तथा गुणों के विकास के लिए नारी शिक्षा की आवश्यकता भारत में आदर्श समाज की संरचना के लिए स्त्रियों को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास हेतु व्यावहारिक शिक्षा आवश्यक है। स्त्रियोचित क्रियाओं व क्षेत्र के अनुकूल क्रियाओं एवं विषयों के नियोजन से नारियों के उचित गुण विकसित किये जा सकते हैं।

किसी नारी का सबसे महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व उसका एक गृहणी के रुप में है। नारी के इसी रुप पर किसी परिवार की खुशी, आपसी प्रेम व परिवार की शान्ति निर्भर करती है। नारी शिक्षित होकर अपने प्रयास, व्यवहार व मधुर पारिवारिक सम्बन्धों द्वारा परिवार में प्रेम, आदर, शान्ति, सुख का निवास स्थान बना सकती है। इसी विषय में सैयदेन के ये शब्द ''ज्ञान अच्छा है बौद्धिक सम्पन्नता और भी अच्छी है और विवके और भी अधिक मूल्यवान गुण है पर यदि वे जीवन की रचना को पूर्ण नहीं बनाते, उसमें संगठित नहीं हो जाते ओर किसी स्त्री को इस योग्य नहीं बनाते कि उसका जीवन कलाकृति बन जाए तो उनका कोई महत्व नही है। किसी नारी की शिक्षा की बहुत बड़ी सार्थकता इसमें है कि वह अपने ज्ञान का, बौद्धिक सम्पन्नता का, विवेक का विनियोग पारिवारिक जीवन को सुन्दर बनाने में करे और विश्वास कीजिए केवल उसी के प्रयास से परिवार प्रेम का एक ऐसा केन्द्र बन सकता है जिसके आधार पर परिवार के हर सदस्य का जीवन चले। स्त्री की नियति है या चाहे तो कहिए नारी सुविधा प्राप्त है, जीवन के उदात्त गुणों की सम्पोषिका है, आत्मा के समस्त गुण उसी से जीवित होते है।'' कारण यह है कि एक नारी किसी की मां तो किसी की बहन व किसी की सहचरी है और परिवार के ये सभी सदस्य भावात्मक रुप से उससे जुड़े होते हैं और नारी का गृहणी होने से घर में सभी उससे ममता और प्यार के लिए इच्छित होते हैं और नारी ही घर को प्यार एवं ममता देकर घर में स्नेहिल वातावरण बनाती है।

मां के कर्तव्य का पालन करना ही नारी का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। एक सुशिक्षित माता ही बालक का लालन–पालन करने व उनमें सुप्रवृत्तियों का विकास करके व्यक्तित्व को निखारती है। सुशिक्षित नारी ही पारिवारिक जीवन को अधिक सुखी एवं आकर्षक बनाती है। हर कोई मां की गोद में पलकर ही जवान होता है। जन्म से लेकर बड़े होने तक प्रत्येक बालक–बालिका पर वातावरण व परिवार का पूरा प्रभाव पड़ता है किन्तु इनमें महत्वपूर्ण प्रभाव मां का ही पड़ता है क्योंकि वह उसकी जननी है। चूंकि बच्चे का पालन–पोषण मां करती है इसलिए बच्चा मां के सम्पर्क में अधिक समय तक रहता है और उसी से प्रभावित होता है। प्रारम्भिक अवस्था में पड़ी आदतें जीवन भर उसका पथ प्रदर्शन करती है।

वर्तमान युग में कभी–कभी यह आवश्यक हो जाता है कि नारी भी परिवार का आर्थिक सहयोग करे। ऐसी स्थिति में स्त्री का शिक्षित होना आवश्यक है। नारी के जीवन में ऐसे भी अवसर आते हैं कि

परिवार में मुख्य सदस्य के न रहने पर परिवार के भरण–पोषण का उत्तरदायित्व स्वयं को निभाना पड़ता है। आर्थिक उपलब्धता के लिए नारी को नौकरी या कोई व्यवसाय तो चुनना ही पड़ता है।

अभिनव समाज रचना के लिए नारियों का सुशिक्षित होना अति आवश्यक है आज का मानव समाज प्राचीन अंधविश्वासों, रीति रिवाजों, कुप्रथाओं के उन्मूलन हेतु प्रयत्नशील है। समाज में व्याप्त सभी प्रकार की समस्याओं जैसे निर्धनता, अज्ञान, अशिक्षा आदि को दूर करने हेतु प्रयास चल रहे हैं। इस प्रयास में नारियों का शिक्षित होना अति आवश्यक है। जब नारियां शिक्षित होंगी, विवेकवान होंगी, साहसी होंगी, ज्ञानवान होंगी, तभी वे हर प्रकार के संघर्ष में पूर्ण सहयोग कर सकेंगी। महर्षि कर्बे ने कहा है, कि नारी शिक्षा से ही ''राष्ट्र की उन्नति संभव है।'

स्वतन्त्र भारत के संविधान ने अपने–अपने राज्यों के प्रत्येक नागरिक, सभी नारी व पुरुष को शासन के समक्ष समान माना है। सभी नागरिकों (स्त्रियों वे पुरुषों) को समानता व स्वतंत्रता के साथ–साथ कई मूल अधिकार प्रदान किए हैं। वर्तमान समय में यदि पुरुषों की शिक्षा को महत्वपूर्ण माना गया है तो नारियों की शिक्षा के महत्व को भी नकारा नहीं जा सकता है। वर्तमान परिस्थितियों में तो नारी शिक्षा का महत्व और भी अधिक हो गया है। भारत एक प्रजातांत्रिक देश है, और प्रजातंत्र में वर्ग जाति, लिंग, धर्म के आधार पर किसी को भी शिक्षा सुविधाओं से वंचित नही किया जा सकता है। वर्ग भेद के आधार पर किसी भी प्रकार की सुविधाओं में अन्तर प्रजातंत्र के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है।

अतः प्रजातंत्र की सफलता के लिए नारी का शिक्षित होना नितांत आवश्यक है। ''स्त्रियां अपने मताधिकार का स्वतंत्रापूर्वक और स्वविवेकानुसार प्रयोग कर सके, यह उनकी शिक्षा पर ही निर्भर करता है। वे समाज एवं देश के प्रति अपने कर्तव्य को समझ सकें, इसके लिए उनका शिक्षित होना और भी आवश्यक एवं अपरिहार्य है।''

''जिस प्रकार अनेक महापुरुषों ने मानव कल्याण के लिए अपना घर परिवार छोड़कर अपना जीवन किसी महान साधना को समर्पित कर दिया, वैसा अवसर नारियों को भी मिलना चाहिए। पत्नी और मां के रुप में उच्च गुण एवं कुशलताओं का प्रयोग करने का अवसर मिलता है पर यदि कोई स्त्री सोचती है कि वह एकाकी रहकर अपने उद्देश्य को अच्छी तरह पूरा कर सकती है तो उसे इसके लिए पूरा अवसर मिलना चाहिए, पर उसके लिए शिक्षा तब और भी महत्वपूर्ण हो जायेगी।''

इस प्रकार नारी शिक्षा समाज परिवार, देश व स्वयं नारियों के लिए अत्याधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षा से ही आत्मबल मिलता है, बुद्धि परिष्कृत होती है, तथा स्वावलम्बन की भावना का विकास होता है। नारी को अपना अधिकार, अपनी स्थिति मजबूत बनाये रखने के लिए उनका शिक्षित होना नितान्त आवश्यक है। नारी शिक्षा की समानता के लिए सरकार व समाज ने प्रयास न किये हों, ऐसा नहीं है परन्तु आशातीत सफलता नहीं मिली, इसके अनेक कारण हैं। इसका सबसे ठोस कारण तो स्वयं महिलाओं का महिला शिक्षा व समानता में असहयोग का है। इस विषय पर स्वामी विवेकानंद जी के शब्द याद आते हैं ''स्त्रियों को सदैव असहायता और दूसरों पर दासवत निर्भरता की शिक्षा दी गयी है।'' महिलाओं की शिक्षा के विकास के बारे में स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है ''पहले अपनी स्त्रियों को शिक्षित करो तब वे आप को बतायेंगी कि उनके लिए कौन से सुधार आवश्यक हैं उनके मामले में तुम बोलने वाले कौन हो।'' अर्थात् स्त्रियां स्वयं अपनी समस्याओं का प्रकटीकरण करें तथा चिन्तन करें, वे उनके समाधान के लिए सामने आयें। समस्या के समाधान में सहयोग करें। महिलायें अपनी समस्या को ज्यादा अच्छी तरह से जानती हैं। स्वतंत्र भारत में नारी का जागरण हुआ और सभी क्षेत्रों में नारियों की स्थिति में सुधार हुआ है और यह सुधार उत्तरोत्तर होता जा रहा है। स्त्रियों की शिक्षा का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है। इसके लिए सरकार ने अनेक योजनायें चलायी व व्यक्तिगत प्रयास भी किये, जिससे नारी शिक्षा का विस्तार हुआ, परन्तु अभी भी महिलाओं की शिक्षा काफी पीछे है। रोजगार के क्षेत्रों भी वे पुरुषों से काफी पीछे हैं। नारियों ने यह तो सिद्ध कर दिया है, कि वह सभी प्रकार के कार्य अवसर मिलने पर कर सकती हैं और कर भी रही हैं, परन्तु पुरुषों की समानता की बात तो अभी दूर ही है। आधुनिक युग में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों अंध विश्वासों के शोषण का शिकार महिलायें बन रही हैं। इन विविध सामाजिक समस्याओं का निदान महिला शिक्षा से ही संभव है। जब तक नारियां शिक्षित नहीं होंगी, वे स्वयं जागरूक नहीं होगी तब तक उनका सम्यक् विकास सम्भव नहीं होगा। यद्यपि विगत वर्षों में इस दिशा में काफी हद तक परिवर्तन आया है फिर भी तकनीकी, वैज्ञानिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र में अभी भी विकास की पर्याप्त आवश्यकता है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

1. डॉ0 रवीन्द्र अग्निहोत्री : ''भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्यायें,'' नई दिल्ली रिसर्च पब्लिकेशन्स इन सोशल साइंसेज पृ0 261, 1980।
2. के0जी0 सैयदेन : 'दफेथ आफ एजूकेशनिष्ट,' बाम्बे, एशिया पब्लिशिंग हाउस पृ0 922, 1965।
3. भँवर लाल सिन्धी : 'ए पद्मभूषण श्री सीताराम सेकसरिया अभिनंदन ग्रन्थ,' कलकत्ता, श्री सीताराम सेकसरिया अभिनंदन ग्रन्थ समिति – 1974 पृ0 50।
4. स्वामी विवेकानन्द : 'कम्पीलीट बर्क्स' – पार्ट 1/11/पृ0 4 ।
5- R. Das : 'Women's Education in Assam in the Post in dependence period" (1947-1971)
6- B. Lakhar : "The Progress of women's education in Assam".
7- P. Baswakumariah : "Rural femals and secondry education".
8- S. Datta : "Study of the Problem of Girl's education in a selected district of west Bengal"
9- B. Majumdar : "Development of women education" 1970
10. V. Basu : "Female education in Bihar" 1975

●